International Journal of Scientific Research in Science and Technology
Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X (www.ijsrst.com)
doi : https://doi.org/10.32628/IJSRST

प्रयागराज एवं बांदा जनपद में मुस्लिम महिलाओं की शैक्षिक स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ० सुशील कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग, हिन्दू कॉलेज, मुरादाबाद।

Article Info
Volume 7, Issue 7
Page Number : 170-175

Publication Issue
November-December-2020

Article History
Accepted : 10 Nov 2020
Published : 10 Dec 2020

सारांश :

भारत एक विशाल देश है जो अपनी अधिक आबादी के साथ-साथ अपनी आबादी की बहुधार्मिकता, बहु-संस्कृति एवं विविधता के लिए सम्पूर्ण विश्व में अपना अद्वितीय स्थान रखता है। इसी विविधता में देश के सबसे बड़े अल्पसंख्यक वर्ग मुस्लिम वर्ग की शैक्षिक स्थिति अन्य वर्ग के समान्तर पिछड़ी हुई है। विशेष रूप से मुस्लिम समुदाय की महिलाओं की शैक्षिक स्थिति अत्यधिक चिंताजनक है। प्रस्तुत शोध में प्रयागराज एवं बांदा जनपद में मुस्लिम महिलाओं की शैक्षिक स्थिति का अध्ययन किया गया है। जिसमें न्यादर्श के रूप में 300 मुस्लिम महिलाओं को शामिल किया गया है।

मुख्य शब्द : मुस्लिम महिला, शैक्षिक स्थिति, संस्कृति, समाज आदि

प्रस्तावना:

शिक्षा का अर्थ ज्ञानार्जन करना है। इसी प्रकार इस्लाम धर्म में ज्ञान के अंतर्गत कुरान शरीफ की आयतों में हजरत मोहम्मद के उपदेशों का ज्ञान जनता तक पहुंचाना तथा मकतब और मदरसों के माध्यम से इसका अधिक से अधिक प्रचार करना ही शिक्षा का मुख्य अर्थ लिया जाता था। इस्लाम का विश्वास है कि अज्ञानता ही समस्त कष्टों और दुखों का कारण है तथा चिंतन ज्ञान का विश्वसनीय स्रोत है। अतः इस्लाम शुद्धतम् ज्ञान में विश्वास रखता है सिद्धांतिक रूप में तो मुस्लिम संस्कृति महिलाओं का सम्मान करती है तथा उसे शिक्षों के समान अवसर देने की बात करती है परन्तु व्यावहारिकता में इस दिशा में कोई ठोस उपाय या प्रयास नहीं किए गए। यही कारणं था कि महिलाओं को मदरसों में प्राथमिक शिक्षा प्रदान की जाती थी। मगर उच्च शिक्षा मदरसों में उसको प्रवेश की अनुमति नहीं थी। मदरसे में उनके प्रवेश निषेध का बहुत बड़ा कारण पर्दा प्रथा थी। इसके फलस्वरूप भी निम्न और निर्धन वर्ग की बालिकाएं या तो ज्ञान प्राप्ति के लाभ से पंचित हो जाती थी या उनका ज्ञान अत्यन्त कम पढ़ने और लिखने तक ही सीमित रह जाता था।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

अध्ययन की आवश्यकता-

हमारे भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति समय-समय पर विभिन्न रूपों में देखने को मिलती है किसी भी समाज और देश की प्रगति के लिए नारी का एक विशेष महत्व है। नारी एक शक्ति ही नहीं बल्कि एक जननी भी है। यदि हम इस्लाम धर्म के मौलिक सिद्धातों की नारीवाद नजरिये से समीक्षा करें तो कुरान और हदीस की कई ऐसी आयतें हैं जिनमें स्त्री और पुरुष को समान अधिकार दिया गया है। विशेषकर शिक्षा के क्षेत्र में हदीस की आयातें हैं, जिससे शिक्षा के महत्व को इस प्रकार बताया गया है -

"तलबुल इल्म फरीजतुन अलाकुल्ली अलुमुस्लिम व मुस्लिमा"

इस आयात के माध्यम से हजरत मुहम्मद साहब ने बताया कि तालीम हर मर्द और औरत के लिए बेहद और निहायत जरूरी है। इसी तरह इस्लाम हर मामले में जाति, धर्म और लिंगों से परे होकर सबको समान अधिकार देता है। कहा जाता है कि इस्लाम धर्म दुनिया के सारे धर्मों में आधुनिक होने के साथ-साथ उदार भी है। इस्लाम की मूल प्रकृति पितृसत्तात्मक नहीं है, बल्कि पितृसत्तात्मक समाज द्वारा बनाई गई है।

मोहम्मद साहब ने इल्म हासिल करने के सम्बन्ध में मर्द औरत की कोई खुसुसियत नहीं की, मिशकात और तिरमिजी की हदीस है। मौहम्मद साहब ने आदेश दिया है कि

"तालीम हासिल करो और लोगों को तालीम दो"

भारत जनसंख्या की दृष्टि से विश्व का दूसरा बड़ा राष्ट्र है। अतः आवश्यक है कि इतने बड़े समुदाय की शैक्षिक स्थिति को अध्ययन किया जाए।

समस्या कथन

"प्रयागराज एवं बांदा जनपद में मुस्लिम महिलाओं की शैक्षिक स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

अध्ययन उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र के अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए है

- मुस्लिम महिलाओं के शैक्षिक विकास में आने वाली सांस्कृतिक बाधाओं का अध्ययन करना।
- मुस्लिम महिलाओं को अपने शैक्षिक अधिकारों के प्रति जागरूकता स्तर का अध्ययन करना।
- मुस्लिम महिलाओं की शैक्षिक स्थिति का अध्ययन करना।
- मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।

परिकल्पनायें –

प्रस्तुत शोध निर्धारित किये गये उद्देश्यों के आधार पर निम्नांकित परिकल्पनायें निम्न हैं:

- मुस्लिम महिलाओं के शैक्षिक विकास में सांस्कृतिक बाधाओं की कोई भूमिका नहीं है।
- मुस्लिम महिलाओं में अपने शैक्षिक अधिकारों के प्रति जागरूकता का स्तर निम्न है।
- मुस्लिम महिलाओं की शैक्षिक स्थिति एवं सामाजिक आर्थिक स्तर के मध्य सकारात्मक सहसम्बन्ध है।

अध्ययन का सीमांकन:

प्रस्तुत शोध निम्नांकित सीमाओं के अन्तर्गत किया गया है -

- प्रस्तुत शोध केवल प्रयागराज तथा बाँदा जनपद तक सीमित है।
- प्रस्तुत अध्ययन केवल मुस्लिम महिलाओं तक सीमित है।
- प्रस्तुत अध्ययन में शहरी एवं ग्रामीण दोनों महिलाओं को सम्मिलित किया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन केवल 300 मुस्लिम महिलाओं द्वारा दिए गए मतों एवं विचारों पर आधारित है।

अध्ययन विधि :

शोध समस्या के स्वरूप को ध्यान में रखते हुए वर्तमान शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या :

प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या के रूप में प्रयागराज तथा बाँदा जिलों में निवास करने वाली सभी मुस्लिम महिलाओं को परिभाषित किया गया है जिसकी संख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 4, 122,132 है।

प्रतिदर्श :

प्रस्तुत अध्ययन में प्रतिदर्श के रूप में 300 मुस्लिम महिलाओं का चयन किया गया है तथा प्रतिदर्श चयन के लिए स्तरीकृत याच्छिक प्रतिदर्शन प्रयोग की गई

सारणी – 1

क्रम संख्या	**शहरी**	**ग्रामीण**	**कुल**
प्रयागराज	75	75	150
बाँदा	75	75	150
कुल	150	150	300

अध्ययन या उपकरण :

प्रस्तुत अध्ययन में शोध उपकरण के रूप में स्वनिर्मित दो प्रश्नावलियां प्रयोग की गई है जिनमें से प्रथम प्रश्नावली में वस्तुनिष्ठ प्रकृति के 45 प्रश्न है तथा दूसरी प्रश्नावली में निबंधात्मक प्रकृति के 5 प्रश्न है।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी:

प्रस्तुत अध्ययन में संकलित प्रदत्त की प्रकृति के आधार पर वर्णात्मक सांख्यिकी के अंतर्गत निम्न सांख्यिकी उपकरणों का प्रयोग किया गया है।

क. मध्यमान

ख. मानक विचलन

ग. क्रांतिक अनुपात

परिकल्पना परीक्षण:

प्रथम परिकल्पना (H1): मुस्लिम महिलाओं के शैक्षिक विकास में सांस्कृतिक बाधाओं की कोई भूमिका नहीं है।

सारणी - 2

प्रयोज्य	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान अंतर की मानक त्रुटि	क्रांतिक अनुपात	सार्थक स्तर		परिणाम
					.05	.01	
ग्रामीण	24.25	6.2	0.98	2.06	सार्थक	असार्थक	स्वीकृत
शहरी	22.23	7.2					

गणना से प्राप्त क्रांतिमान (206), 0.05 सार्थकता स्तर के मानक मान 1.96 से अधिक है अर्थात् उपरोक्त परिकल्पना 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक सिद्ध होती है, परिमाणतः 0.05 स्तर पर अस्वीकृत होती है। परंतु गणना से प्राप्त क्रांतिमान 0. 01 सार्थकता स्तर के मानक मान 2.58 सार्थकता स्तर के मानक मान से कम है, तात्पर्य है कि परिकल्पना 0.01 सार्थकता स्तर पर असार्थक है, परिमाणतः स्वीकृत सिद्ध होती है।

द्वितीय परिकल्पना (H2): मुस्लिम महिलाओं में अपने शैक्षिक अधिकारों के प्रति जागरूकता का स्तर निम्न है।

सारणी-3

प्रयोज्य	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान अंतर की मानक त्रुटि	क्रांतिक अनुपात	सार्थक स्तर		परिणाम
					.05	.01	
ग्रामीण	18.34	5.8	0.58	1.74	सार्थक	असार्थक	स्वीकृत
शहरी	17.33	6.0					

गणना से प्राप्त क्रांतिमान (1.74) 0.05 सार्थकता स्तर के मानक मान 1.58 से बड़ा है अर्थात् उपरोक्त परिकल्पना 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है परिमाणतः वह अस्वीकृत हुई। परंतु गणना से प्राप्त क्रांन्तिक मान 0.01 सार्थकता स्तर के मान मानक मान 2.63 से कम है अर्थात् परिकल्पना 0.01 स्तर पर असार्थक है, इसलिये 0.01 स्तर पर स्वीकृत सिद्ध होती है।

तृतीय परिकल्पना (H3): मुस्लिम महिलाओं की शैक्षिक स्थिति एवं सामाजिक आर्थिक स्तर के मध्य सकारात्मक सहसम्बन्ध है।

सारणी – 4

प्रयोज्य	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान अंतर की मानक त्रुटि	क्रांतिक अनुपात	सार्थक स्तर		परिणाम
					.05	.01	

ग्रामीण	22.52	5.7	1.05	2.15	सार्थक	असार्थक	स्वीकृत
शहरी	20.26	6.9					

गणना से प्राप्त क्रांतिमान (2.15) 0.05 सार्थकता स्तर के मानक मान 1.58 से बड़ा है अर्थात् उपरोक्त परिकल्पना 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है परिमाणतः वह अस्वीकृत हुई। परंतु गणना से प्राप्त क्रांतिक मान (2.15) 0.01 सार्थकता स्तर के मानक मान 2.63 से कम है अर्थात परिकल्पना 0.01 स्तर पर असार्थक है. इसलिये 0.01 स्तर पर स्वीकृत सिद्ध होती है।

निष्कर्ष-

मुस्लिम समाज में महिलाओं की स्थिति में आने वाली सांस्कृतिक बाधाओं, उनके शैक्षिक आधारों के प्रति जागरूकता, उनका सामाजिक, आर्थिक स्तर, केन्द्र व राज्य की नीतियों एवं शिक्षा के सन्दर्भ में उलेमा व मदरसों की भूमिका के आधार पर प्राप्त हुये आंकड़ों के आधार पर निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुये -

1. मुस्लिम महिलाओं के शैक्षिक विकास में सांस्कृतिक बाधाओं की भूमिका रहती है। ग्रामीण मुस्लिम महिलाओं की अपेक्षा शहरी मुस्लिम महिलाओं के शैक्षिक विकास में सांस्कृतिक बांघाए ज्यादा रहती है।
2. सामान्यता यह कहा जाता है कि शहरी मुस्लिम महिलायें शैक्षिक अधिकारों के प्रति अधिक जागरूक होती हैं, लेकिन आकड़ों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात होता है कि ग्रामीण मुस्लिम महिलाओं में शहरी मुस्लिम महिलाओं की अपेक्षा शैक्षिक अधिकारों के प्रति अधिक जागरूकता रहती है।
3. किसी भी समाज के शैक्षिक पृष्ठभूमि पर सामाजिक, आर्थिक स्तर की मुख्य भूमिका रहती है। ग्रामीण मुस्लिम महिलाओं पर उनके सामाजिक आर्थिक स्तर का स्पष्ट धनात्मक प्रभाव उनकी शैक्षिक स्थिति पर पड़ता है, जबकि शहरी मुस्लिम महिलाओं का सामाजिक, आर्थिक स्तर ठीक होने के कारण शैक्षिक स्थिति भी ठीक है।

शैक्षिक निहितार्थ -

प्रस्तुत अध्ययन में मुस्लिम महिलाओं की आर्थिक, शैक्षिक सामाजिक एवं संस्कृतिक में आने वाली समस्याओं का अध्ययन करने का प्रयत्न किया गया है । इसके अध्ययन से जो प्रमुख उपयोगी तथ्य उभर कर सामने आये है उनकी शैक्षिक उपादेयता अपने आप में स्पष्ट है।

यह तथ्य सर्वाविदित है कि स्त्री ही भावी पीढ़ी की जन्मदाता है। अपने परिवार, अपने बच्चों की देखभाल, उनका भली-भांति प्रकार से पालन-पोषण, उनमें नैतिक गुणों का विकास करके अच्छा नागरिक बनाना एक नारी का कर्तव्य है। अतः एक नारी को शिक्षित तथा अपने अधिकारों एवम् कर्तव्यों के प्रति जागरूक होना चाहिए। परन्तु हमारे पुरुष प्रधान समाज में लिंग भेद अनन्तकाल से होता आया है। नारी को पुरूषों के समान स्वछन्दता, मान एवम् साधन उपलब्ध नहीं है। यह समस्या मुस्लिम समाज में अधिक विद्यमान है।

संदर्भ ग्रन्थ सूंची और पुस्तक सूंची -

- भट्टाचार्य, जी०सी० (2016- 17) अध्यापक शिक्षा नवीन संस्करण, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स |
- जैन, कमलेश (2014). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, द्वितीय संस्करण, आगरा, साहित्य प्रकाशन |
- माथुर, एस०एस० (2013). "शिक्षा के दार्शनिक व समाजशास्त्रीय आधार आगरा अग्रवाल पब्लिकेशन।

- अस्थाना, विपिन (2012), शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी, आगरा, उत्तर प्रदेश, अग्रवाल पब्लिकेशन।
- पाठक, पी०डी० (2012), शिक्षा मनोविज्ञान, ब्लालिसवॉ संस्करण, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स ।

शोध पत्र / शोध

- शर्मा, श्रीभगवान, (2009). "माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की दुश्चिन्ता एवं आकांक्षा स्तर के मध्य सह सम्बन्ध का अध्ययन एक अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, एम०जे०पी० रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली।
- कुमार दिनेश (2008), "उच्चतर स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं की वृत्तिक अभिज्ञता तथा उनके सामाजिक आर्थिक स्तर का अध्ययन" एक अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, एम०जे०पी० रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली।
- कुमार, सुभाष (2003), "जूनियर हाईस्कूल की बालिकाओं पर एक अध्ययन' एक अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध एम०जे०पी रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली ।
- Sharma Usha, (2003) "India women from tradition to modernity" vista international publishing house, Delhi.
- A, Saukath, (1997) "Muslim women emerging identity", Eawat publication, Jaipur and New Delhi.
- G.M.D. Sufi, (1944) "Being a discussion of the status and schooling muslim women in India". Rawat publication, New Delhi.

पत्र / पत्रिकाऐं

- दैनिक जागरण (दैनिक समाचार)
- अमर उजाला (दैनिक समाचार)
- नव भारत टाइम्स (दैनिक समाचार)
- कुरूक्षेत्र (मार्च अंक, दिसम्बर अंक - 2011, 2013)
- योजना (पत्रिका) (जनवरी, नबम्बर, दिसम्बर 2013)
- कानून-ए-शरीयत भाग - 2
- इण्टरनेट